नाट्य रूपांतर सुन रखे थे। वे चाहते थे कि मैं उनके लिए भी कोई धारावाहिक रेडियो नाटक लिखूँ। मैं उन दिनों शूद्रक का संस्कृत नाटक 'मृच्छकटिकम' पढ़ रहा था। मैंने उसका नाट्य रूपांतर करने का प्रस्ताव किया, तो उन्होंने खुश होकर मुझे यह काम सौंप दिया। मैंने 'मिट्टी की गाड़ी' के नाम से उसका रेडियो नाट्य रूपांतर किया, जो कई किस्तों में धारावाहिक रूप से प्रसारित हुआ। उसमें चारुदत्त के चरित्र के लिए रेडियो नाटकों के प्रसिद्ध कलाकार विनोद शर्मा ने और वसंतसेना के चरित्र के लिए फिल्म अभिनेत्री कल्पना ने अपना स्वर दिया था।

फिल्म अभिनेत्री की बात से याद आया, दिल्ली में एक शाम को सत्येंद्र शरत् से भेंट हुई, तो उन्होंने बताया कि फिल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री कामिनी कौशल मनोज कुमार की फिल्म 'उपकार' की शूटिंग के सिलसिले में दिल्ली आयी हुई हैं। वे उनकी आवाज में छोटी-सी कोई ऐसी चीज रिकॉर्ड करना चाहते थे, जो एक उम्रदराज महिला के एकालाप के रूप में हो और जिसे हल्के-फुल्के नाटक के रूप में 'हवामहल' कार्यक्रम में प्रस्तुत किया जा सके। यह बताकर उन्होंने कहा, ''रमेश, कामिनी कौशल जी मेरे अनुरोध पर रिकॉर्डिंग के लिए आने को राजी हो गयी हैं, पर उन्होंने कल दोपहर का समय दिया है। उसके लिए तुम्हारा लिखा एकालाप कल सुबह तक मुझे हर हालत में चाहिए।'' मैंने उनसे कहा, ''भाईसाहब, शाम हो गयी है, घर लौटते मुझे रात हो जायेगी। रात भर में कैसे मैं...?'' मेरी बात बीच में ही काटते हुए उन्होंने कहा, ''वैसे ही, जैसे अपना पहला रेडियो नाटक तुम अगले ही दिन लिख लाये थे। मेरे लिए यह काम तुम्हें करना ही है। कल सुबह दस बजे मुझे स्क्रिप्ट मिल जानी चाहिए।''

उस रात मैंने एक छोटी-सी कहानी लिखी और अगले दिन आकाशवाणी जाकर शरत् जी को सौंप दी। वे एक साँस में उसे पढ़ गये। पढ़कर उन्होंने मुझे गले लगाया और मेरी पीठ ठोंककर शाबाशी दी। बाद में उन्होंने मुझे बताया कि कामिनी कौशल भी मेरी कहानी पढ़कर बहुत खुश हुईं। शरत् जी ने उसमें सड़क पर ताँगा चलने की, स्टेशन पर भीड़भाड़ की, ट्रेन की सीटी की और ट्रेन चलने आदि की आवाजों के ध्वनि प्रभाव जोड़कर उसे एक बढ़िया रेडियो नाटक बना दिया था।

'लोकलाज' नामक वह रेडियो नाटक कामिनी कौशल की आवाज में असंख्य बार विविध भारती से प्रसारित हो चुका है और अब भी कभी-कभी सुनने को मिल जाता है। मेरी वह कहानी इसी शीर्षक से 1966 में छपी थी और मेरे कहानी संग्रह 'एक घर की डायरी' में संकलित है।

'अक्षर पर्व' के पाठकों के लिए वह कहानी, जो रेडियो नाटक बन गयी, यहाँ यथावत प्रस्तुत है।

लोकलाज

सब सामान ठीक है न? बिरजू, दीपू, उमा, अरे...निक्की कहाँ गयी? बुलाकर लाओ। देखो, गाड़ी का वक्त हो गया है। लेट हो गये, तो सब किया-कराया रखा रह जायेगा। क्या, एक घंटा पड़ा है अभी? तुम्हें तो हर बात में ढील डालनी आती है। टिकट-फिकट लेने में भी तो देर लगेगी। गाड़ी में जगह आराम की मिल जायेगी। दस-पाँच मिनट पहले पहुँचना अच्छा होता है। बुलाओ, निक्की को बुलाओ। तू जा उमा, कहना-अम्मा नाराज हो रही हैं। आ गयी? क्यों री, तुझे जाना नहीं है क्या? अरे भागवान, यह सलवार-कमीज उतार, धोती पहन ले। गाँव है, वहाँ पहाड़ की पहाड़ लड़कियाँ सलवार-कमीज पहने नहीं घूमतीं। जा, जल्दी जा, मेरा मुँह क्या देख रही है। भाभी से माँग ले। अरे, वो जार्जट वाली पहन ले। ब्लाउज! हे भगवान! जो कुछ करूँ, मैं ही करूँ! अच्छा चल! अजी सुनो, तुम तब तक ताँगा ले आओ...

ओ दीपू के बच्चे! यह क्या शैतानी लगा रखी है? नहीं, अब एक भी नहीं मिलेगा। सारे बिस्कुट यहीं खा लेगा तो रास्ते में क्या खायेगा? मेरा सिर? चलो, पानी पियो। बहू, जरा मुँह पोंछ दे इसका। देखो तो, कैसा भूत बन रहा है! उमा, बेटा, ले, जरा यह टिफिन भी उठाकर सामान के पास रख ले। बहू, मेंहदी नहीं मिली थी, तो महावर ही लगा लेती। ऐसे पैर अच्छे नहीं लगते। अरे, मैंने कहा था, बक्से में से तोड़ियाँ निकालकर पहन ले। घर में तो चाहे जैसा रह लो, पर बाहर नंगे पैर अच्छे नहीं लगते। लॉकिट पहन लिया कि नहीं? शरमाने की क्या बात है? आखिर ब्याह में जा रहे हैं? सब बहू-बेटियाँ पहन-ओढ़कर आयेंगी। नहीं, निक्की यों ही ठीक है। चेन डाल लेगी गले में। मैं? अरे, मेरा क्या है, मैं तो यों ही ठीक हूँ। अरे बिरजू, देख तो, पापा ताँगा लेने गये हैं या कहीं किसी से बातों में ही तो नहीं उलझ गये? जा बेटा, देखना तो!

हाय राम! निक्की, कहीं मेरी नजर न लग जाये। कमबख्त इत्ती बड़ी लगती है साड़ी में। पल्ला ठीक कर ले। साड़ी पहनने का भी सऊर नहीं है। ऐ उमा, चलो बंद करो संदूक। क्या ले रही है? छोड़-छोड़! गाँव के बच्चे ऐसे खिलौनों से नहीं खेलते। रख दे सब। अभी तो दानी करण बनी जा रही है, लौटकर आयेगी, तो कहेगी--अम्मा, खिलौने ले दो। फिर कौन पैसे डालेगा? नहीं माँगेगी? सच्ची कह रही हूँ, फिर कभी कहा कि अम्मा, खिलौने ले दो, तो देख, याद रखना! अच्छा ले ले, मर तू भी! चल, उस थैले में रख दे!

हाँ-हाँ, सब ले-ले, एक भी न रहे। जैसे लौटकर आना ही नहीं है। बस, ठीक है। निक्की, बहू, सोच लो, कुछ और लेना हो। अरे, चाय! हाँ, चाय का पैकेट जरूर रख लो, वहाँ तो मिलती नहीं। मैं तो रह नहीं पाऊँगी। हेमा के ब्याह में गयी थी, तो तुलसी औटाकर पीनी पड़ी थी। बिरजू, आ गया ताँगा? बुला ले यहीं उस ताँगे वाले को, उठाकर ले जाये सामान। अरे भैया, कौन ज्यादा है! छोटे-छोटे चार नग तो हैं कुल! तो क्या पैसे नहीं लोगे? अच्छा-अच्छा, ठीक है। चलो सब जने, बैठो ताँगे पर!

अच्छा, बिरजू बेटा, घर का खयाल रखना। जरा चौकन्ने सोना। खाना सावित्री के यहाँ खा लिया करना। चाय बनाने की जरूरत पड़े, तो पैकेट ले आना। घर में जो था, मैं ले जा रही हूँ। और देखो, ज्यादा दोस्त-वोस्त मत ले के पहुँच जाना सावित्री के घर। वैसे सावित्री ऐसी है तो नहीं, पर हमें तो ध्यान रखना ही चाहिए। अच्छा, पैसे तो तुम्हारे पास हैं न? अजी सुनो, बिरजू को कुछ पैसे और दे दो। लेकिन बेटा, जब तक हम न आयें, सिनेमा-विनेमा मत